https://kalaasamiksha.in/
Kalaa Samiksha - Volume 01, No 06, PP 230-239 (Total PP 10)
ISSN : 3107- 4936(Online)
Frequency – Monthly

A Critical Study of Indian Myths in the Poetry of Kalidasa (कालिदास के काव्यों में भारतीय मिथकों का समीक्षणात्मक अध्ययन)

Ganesh Narasimha Rao Reddy [a]*

[a] *Research Scholar, Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi, Uttar Pradesh*
[a]*Email:* ***yajurvedagnr@gmail.com***

Abstract

This paper critically examines Indian myths (legendary stories) contained in the poetry of the great poet Kalidasa. The poet has been described as a visionary, creating a supernatural world through his imagination and ingenuity. Indian myths, a vast collection of religious, philosophical, and ethical beliefs, define the universe, human values, and the mysteries of life.

The present research analyzes the mythical elements used in seven of Kalidasa's major works—Kumarsambhavamsa, Raghuvamsa, Meghaduta (skhand/short poems), Ritusamhara (short poems), and Malavikagnimitra, Vikramorvasiya, and Abhijnana Shakuntalam (visual poems). Studying the concept of myth, the research explores the ethical, universal, and cultural values expressed through the supernatural elements (such as gods, yakshas, nymphs, curses, boons) and metaphorical allegories embedded in mythological narratives.

Kalidasa creatively reimagined these myths from the Vedas, Ramayana, Mahabharata, and Puranas. For example, the curse of Surabhidhenu in Raghuvamsa, the supernatural love of Pururavas and Urvashi in Vikramorvasiya, and the loss of memory due to a curse in Abhijnana Shakuntalam. This research concludes that Kalidasa's poetry profoundly enriches Indian art and literature by expressing human thought in the literary language of myths.

यह शोधपत्र महाकवि कालिदास के काव्यों में निहित भारतीय मिथकों (पौराणिक कथाओं) का समीक्षणात्मक अध्ययन करता है। कवि को क्रांतदर्शी कहा गया है, जो अपनी कल्पना और प्रतिभा से अलौकिक सृष्टि की रचना करता है। भारतीय मिथक, जो धार्मिक, दार्शनिक और नैतिक विश्वासों का विशाल संग्रह है, ब्रह्मांड, मानवीय मूल्यों और जीवन के रहस्यों को परिभाषित करता है।

प्रस्तुत शोध में कालिदास की सात प्रमुख कृतियों–कुमारसंभव, रघुवंश, मेघदूत (खंड/लघु काव्य), ऋतुसंहार (लघु काव्य), और मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय, अभिज्ञान शाकुन्तल (दृश्य काव्य) में प्रयुक्त मिथकीय तत्वों का विश्लेषण किया गया है। मिथक की संकल्पना का अध्ययन करते हुए, शोध में पौराणिक कथाओं में निबद्ध अलौकिक तत्वों (जैसे देवताओं, यक्षों, अप्सराओं, श्राप, वरदान) और रूपकात्मक अलंकरणों के माध्यम से व्यक्त नैतिक, वैश्विक और सांस्कृतिक मूल्यों का अन्वेषण किया गया है।

कालिदास ने वेदों, रामायण, महाभारत और पुराणों से प्राप्त इन मिथकों को अपनी रचनात्मकता से नया आयाम दिया। उदाहरण के लिए, रघुवंश में सुरभिधेनु का श्राप, विक्रमोर्वशीय में पुरुरवा-उर्वशी का अलौकिक प्रेम, और

अभिज्ञान शाकुन्तल में शाप के कारण स्मृति का विलोप। यह शोध निष्कर्ष निकालता है कि कालिदास के काव्य मानवीय विचारों को मिथकों की साहित्यिक भाषा में अभिव्यक्त कर भारतीय कला और साहित्य को गहराई से विकसित करते हैं।

Keywords: Kalidasa's poetry, Indian myth, mythology, supernatural elements, critical study

कालिदास काव्य, भारतीय मिथक, पौराणिक कथा, अलौकिक तत्व, समीक्षणात्मक अध्ययन

Received: 8/28/2025
Published: 9/02/2025

---

* Corresponding author.

सामान्यजन जिन तत्त्वों कों दृष्टिगोचर नहीं कर सकते ऐसे कितने रहस्यों कों कवि मात्र अपने मनचक्षु से उन्मीलित करते हैं । अतः कवि को क्रांतदर्शी कहा गया है । मानव जीवन के कई पहलुओं को कवि अपनी कल्पनाशक्ति से उजागर करते हैं। **'यद् न पश्यति रविः तद् पश्यति कविः'** इस उक्ति के अनुसार वास्तविक जगत् से परे अलौकिक सृष्टि की रचना अपनी प्रतिभाद्वारा कवि पल में हि कर लेता है । अपनी कल्पना शक्ति से रोमांचक, अद्भुत एवं अलौकिक वर्णनों से रंगकर्म का शिखर स्थापित करने का यह चमत्कार कवि ने ही किया था। वाल्मीकि, व्यास, भास, कालिदास, माघ, भारवि और बाणभट्ट जैसे कवियों ने अपनी प्रतिभा से साहित्य में अनेक रंग–बिरंगे और अद्भुत वर्णन जोड़े हैं। कालिदास का सप्तरंगी इन्द्रछाप विश्व भर में प्रसिद्ध है। 'अभिज्ञान शाकुन्तल' नाटक ने जर्मन कवि मि. गेट को भी आकर्षित किया था। पाँच काव्यों में 'कुमारसंभव और 'रघुवंश' सर्वोपरि माने गए। वियोगी यक्ष का मनमोहक वर्णन मेघदूत में मिलता है। 'मेघदूत खण्ड और 'ऋतुसंहार लघु काव्य प्रसिद्ध हैं। इसी प्रकार, 'मालविकाग्निमित्र', 'विक्रमोर्वशीयम' और अभिज्ञान शाकुन्तल जैसे दृश्य काव्य भी हैं। इन सात कृतियों के साथ कालिदास प्रसिद्ध सर्वोच्च शिखर पर पहुँचे।

भारतीय मिथक अर्थात् भारतीय संस्कृति में प्रचुर रूप से दिखती पौराणिक कथाएँ धार्मिक, दार्शनिक , सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, नैतिक विश्वासों का एक विशाल संग्रह है जो भारत के इतिहास और संस्कृति में गहराई से निहित है । यद्यपि मिथकों कथाएँ देवताओं, नायकों, राक्षसों और अन्य अलौकिक प्राणियों के इर्द–गिर्द घूमती है तथापि वे ब्रह्मांड, मानवीय मूल्यों की, जीवन के अनकहे रहस्यों की, नैतिक–वैश्विक –सामाजिक–राजकीय–सांस्कृतिक–धार्मिक मूल्यों को परिभाषित करती हैं । मिथक लोककथाओं की एक शैली है जिसमें मुख्यतः ऐसे आख्यान होते हैं जो समाज में एक मौलिक भूमिका निभाते हैं। विद्वानों के लिए, यह ''मिथक'' शब्द के स्थानीय प्रयोग से बहुत अलग है, जिसका अर्थ एक ऐसी मान्यता है जो सत्य नहीं है, क्योंकि लोककथाओं की सत्यता उनके मिथक होने का कोई निश्चित मानदंड नहीं है। प्रस्तुत शोधपत्र में कालिदास के काव्यों में दृष्टिगोचर मिथकों का अध्ययन समीक्षणात्मक शोध पद्धति द्वारा किया

गया है । उपर्युक्त साहित्य में न केवल मिथक की आलोचना की है अपितु उनके नैतिक, वैश्विक, सांस्कृतिक, और पौराणिक वैधताओं का भी विश्लेषण है ।

मिथक परिभाषा –

प्राचीन धार्मिक मान्यताओं को लोककथाओं को व्यक्त करनेवाली अतिप्राकृतिक अथवा अतिमानवीय कथाओं को पुराकल्पन अर्थात मिथक कहते है । कवि जब काव्य का प्रणयन करते है तब वे ऐतिहासिक इतिवृत्त का भी आश्रय लेते है । पौराणिक कथाओं में निबद्ध मिथकों को कवि अपनी प्रतिभाशक्तिद्वारा कल्पनाविष्कार अद्भुत काव्य का सृजन करता है तब वह सामान्य कवि की श्रेणी से उठकर अमर महाकवि के पद को प्राप्त करता है ।

मिथक एक प्राचीन कथा या कहानी है जो अक्सर देवताओं, अर्ध–देवताओं, या पौराणिक प्राणियों के बारे में होती है। मिथक में अक्सर अलौकिक या अद्भुत घटनाएं शामिल होती हैं जो प्राकृतिक घटनाओं, मानव जीवन, या सांस्कृतिक परंपराओं की व्याख्या करने का प्रयास करती हैं। मिथक का उद्देश्य अक्सर यह होता है कि वह किसी समाज या संस्कृति के मूल्यों, मान्यताओं, और परंपराओं को समझाने और उन्हें पुष्ट करने का काम करता है। मिथक में अक्सर नैतिक शिक्षा या संदेश भी शामिल होता है जो पाठकों या श्रोताओं को जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं के बारे में सिखाता है। मिथक और इतिहास के बीच का अंतर यह है कि मिथक में अक्सर अलौकिक या अद्भुत तत्व शामिल होते हैं जो ऐतिहासिक तथ्यों के रूप में प्रमाणित नहीं होते हैं। इसके बावजूद, मिथक सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं और अक्सर साहित्य, कला, और अन्य रचनात्मक कार्यों में प्रेरणा का स्रोत बनते हैं।

मिथक एक व्यापक संकल्पना –

मिथक शब्द प्राचीन मिथ से ही बना है संस्कृत और आंग्ल दोनों भाषाओं में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है । ''संस्कृत में मिथ शब्द का आशय दो तत्वों के मिलन तथा प्रत्यक्ष ज्ञान से है । आंग्ल भाषा में मिथ का अर्थ है – कोरी कल्पना।''[र] मिथक एक व्यापक संकल्पना है जो विभिन्न संस्कृतियों और समाजों में पाई जाती है। यह एक ऐसी कथा या कहानी है जो अक्सर अलौकिक या अद्भुत घटनाओं के बारे में होती है, जो प्राकृतिक घटनाओं, मानव जीवन, या सांस्कृतिक परंपराओं की व्याख्या करने का प्रयास करती है। अंग्रेजी के मिथ को हिंदी में मिथक के रूप में प्रयोग हजारीप्रसाद द्विवेदीजी ने किया है । हमेशा से ही यह ज्ञान है कि मिथक की लोककथाएँ, दन्तकथाएँ एक स्पष्ट नैतिक संदेश देती है । संरचनावादी दृष्टिकोण भी मिथक और भाषा की समानता पर आधारित है ।

[j] संस्कृत साहित्य और मिथक – अर्थ और स्वरूप, सोनिया, सनातन धर्म महाविद्यालय, मुज्जफरनगर.

मिथक शब्द ग्रीक मिथोस से आया है, जिसके कई अर्थ है – शब्दकथन, कहानी, कल्पना, वास्तव में यह मानव संस्कृति का एक आधारभूत घटक है । मानवीय मूल्यों की अन्तर्गत संरचना समाज में आदर्शों को अधिष्ठित करती है । जिसमें निर्विवाद रूप से मिथकों का अपना एक सहयोग है ।

दंतकथा, किंवदंतियाँ, परिकथाएँ, लोककथाएँ, गाथाएँ, महाकाव्य, एटिआलाजिकल कहानिया, इन सबमें चित्रित रूप, दृष्टांत, उद्देश तथा चरित्र मिथक से ही परिलक्षित है । उपर्युक्त साहित्य विधा में मुख्य रूप से मानवकृत पशु, प्राकृतिक वतुओं पर मानवारोपण, शास्त्र और विज्ञान से परे अलौकिक सृष्टि का चमत्कार दृष्टिगोचर होता है ।

मिथक की विशेषताएँ –

1. अलौकिक तत्वः मिथक में अक्सर अलौकिक या अद्भुत तत्व शामिल होते हैं जो वास्तविकता से परे होते हैं।

2. प्राकृतिक घटनाओं की व्याख्याः मिथक प्राकृतिक घटनाओं की व्याख्या करने का प्रयास करते हैं, जैसे कि सूर्य और चंद्रमा की उत्पत्ति।

3. सांस्कृतिक महत्वः मिथक सांस्कृतिक महत्व रखते हैं और अक्सर समाज के मूल्यों और मान्यताओं को प्रतिबिंबित करते हैं।

4. प्रतीकात्मक अर्थः मिथक में अक्सर प्रतीकात्मक अर्थ होते हैं जो गहरे अर्थों और संदेशों को प्रकट करते हैं।

मिथक का महत्व –

1. सांस्कृतिक विरासतः मिथक सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं।

2. नैतिक शिक्षाः मिथक अक्सर नैतिक शिक्षा प्रदान करते हैं।

3. कलात्मक प्रेरणाः मिथक कलात्मक प्रेरणा का स्रोत होते हैं।

इस प्रकार, मिथक एक व्यापक संकल्पना है जो विभिन्न संस्कृतियों और समाजों में पाई जाती है और सांस्कृतिक महत्व रखती है।

शोध के उद्देश –

1. मिथक संकल्पना का अध्ययन करना ।

2. मिथकों का समीक्षणात्मक परिशीलन करना ।

3. भारतीउ मिथक की संकल्पना का अध्ययन ।

4. संस्कृत साहित्य में मिथकों का अन्वेषण ।

5. कालिदास के साहित्य में मिथकीय तथ्यों का अध्ययन करना ।

शोध प्रविधि –

प्रस्तुत शोधपत्र में समीक्षण शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है ।

कालिदास के साहित्य में मिथक –

भारतीय काव्य में कवि काव्य–कला के कवि और नायिका को जन्म देते हैं। इसी प्रकार पाश्चात्य कवि नायक और नायिका को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में श्रद्धांजलि देते हैं। यद्यपि सुख का पूर्वी छोर और दुःख का पाश्चात्य छोर काव्य की पराकाष्ठा है। इस रूपांतरण में अलौकिक तत्त्व का विसर्जन एक शोधपरक अभिलाषा है। स्त्री–पुरुष के बीच संबंध और परस्पर पूरकता का दृष्टिकोण 'पुरुरवा उर्वशी' और 'विक्रमोर्वशीयम' है जबकि 'मनु–शतरूपा' सृष्टि के त्याग के प्रतीक हैं। दूसरे में 'आदम–हव्वा' के रचयिता की लीला है। पूर्व और पश्चिम का यह मिथक रूपायित सृजन की प्रक्रिया है। वस्तुतः काव्य का लक्ष्य सम्पूर्ण मानवता की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करना है।

भारतीय धर्मशास्त्र का आधार पौराणिक कथाएँ और उनमें वर्णित रूपक कथाएँ हैं। वेदों के विस्तार का कार्य पुराण साहित्य ने किया है। पुराण लक्षणावलियों में अलौकिक तत्व का भी उल्लेख मिलता है। ''सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च। वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥[k] ''सृष्टि, प्रजनन, वंश, मन्वंतर और राजवंशों का इतिहास'' ये पाँच लक्षणावलियाँ पुराणों में वर्णित हैं। गरुड़ पुराण में नरक और यमलोक का वर्णन है, स्कंद पुराण में दस अवतारों की कथा है, विन्ध्य पर्वत और नारद का संवाद है, सप्तर्षियों का वर्णन है, मत्स्य पुराण में ब्रह्मा और सरस्वती का चरित्र है, विष्णु पुराण में देवताओं और राक्षसों का वर्णन है।[स]

वैदिक मिथकों के बीज रामायण और महाभारत में पाए जाते हैं।[उ] रामायण में गंगा अवतरण, हनुमान का समुद्र पार करना, ताड़का वध, रावण की उड़ान और स्वर्ण मृग जैसे विविध वर्णन हैं। इस अद्भुत रामायण में दो रावणों, सहस्रमुख और दशमुख, का उल्लेख है।[द] कुमारसंभव में कार्तिकेय के जन्म

---

[k] संस्कृत साहित्य का इतिहास –भाग–३, डॉ. सुरुचि पाण्डे
[l] संस्कृत साहित्य– बलदेव उपाध्याय
[m] मिथक और साहित्य– डॉ. नगेन्द्र, पृष्ठ क्र.४५
[n] संस्कृत साहित्य का इतिहास –भाग–३, डॉ. सुरुचि पाण्डे

में अलौकिक तत्व का चित्रण, हिमालय का मानवीकरण, रघुवंश में रघुवंश के राजाओं का वर्णन अद्वितीय है।[व] 'विक्रमोर्वशीयम' त्रय में स्वर्ग पृथ्वी पर आता है क्योंकि आसक्ति 'मोह' की अभिव्यक्ति है। खोए हुए प्रेम का चित्र जागृति का प्रतीक है। पृथ्वी पर रहने वाले राजा पुरुरवा उर्वशी के सौंदर्य पर आकृष्ट हुए। अपरिवर्तनीय भावनाओं की मधुमास उर्वशी 'भावुक पुरुरवा' की भावनाओं को जागृत करती है। यहाँ भी उपेक्षा का दंड क्षमता का ह्रास है। उर्वशी और पुरुरवा 'अलौकिक सार' के ढाँचे हैं। 'अभिज्ञान शाकुन्तल' में शकुन्तला का अकल्पनीय सौंदर्य मूर्तिमान बाधा का प्रतीकात्मक संकेत है। प्रेम में शाप का दंड, एक ज्योतिर्मय स्त्री का अवतरण (एक अत्यंत स्वाभाविक गुण), और अप्सरा के तीर्थस्थल की तीर्थयात्रा पर स्मृतियों के द्वार का खुलनाय यह घटना अलौकिक तत्व के महत्व को दर्शाती है। यहाँ कथानक कहता है कि जो अपने अतीत से वर्तमान को नहीं पढ़ेगा, उसे भविष्य में दंड मिलेगा। विचित्र नियति की विडंबना के मूल में, उंगली ही पहचान का काम करती है। प्रकृति की गोद में पली–बढ़ी शकुंतला के लिए स्वर्ण आभूषण कृत्रिम सभ्यता का प्रतीक है और अत्यंत स्वाभाविक प्रतीक है। पुरुष और प्रकृति के सूत्र–बंधन में संसार के ऋषिगण उसे जो सम्मान देते हैं, वह भावनात्मक कौशल का इन्द्र धनुष है।

स्वर्ग, नरक, पाताल, नाग लोक, यक्ष लोक, वैकुंठ आदि स्थानों को अलौकिक स्थान कहा जाता है। इन स्थानों की रचना कालिदास ने पौराणिक कथाओं के आधार पर काव्यात्मक कल्पना से की थी। रघुवंशी महाकाव्य के प्रथम श्लोक में राजा दिलीप संतान प्राप्ति हेतु ऋषि वशिष्ठ के आश्रम गए तो ऋषि ने बताया कि सुरभिधेनु के श्राप के कारण उन्हें संतान नहीं हुई है। उस समय सुरभि पाताल में थी इसलिए तुम्हें उनकी पुत्री नंदी की सेवा करनी चाहिए –

''हविषे दीर्घसत्रस्य सा चेदानीं प्रचेतसः। भुजंगपिहितद्वारं पातालमधितिष्ठति॥[प]

राजमहल के तोरणद्वार पर ही कल्प वृक्ष है, पारिजात पुष्पों का ढेर है, कभी स्वस्ति वाचन होता था और सुन्दर अप्सराओं का निवास है –

'निसर्गकल्पद्रुमतोरणं तं स पारिजातप्रसवस्त्रगाढ्यम्।

दिव्यैः कृतस्वस्त्ययनं मुनीन्द्रैरन्तः प्रविष्ट प्रमदं प्रपेदे।।[ग]

महाकाव्य कुमारसंभवम् में, कालिदास चतुर्मुख ब्रह्मा का वर्णन करते हैं जब इंद्र आदि देवता रक्षा के लिए ब्रह्मा के पास जाते हैं। यद्यपि ऋतुसंहार में अलौकिक तत्वों का प्रत्यक्ष वर्णन नहीं है, फिर भी 'अनंगः' (6–12), 'कामः' (6.4), 'मदनः' (6.6), 'कंदर्पबाणः' (6.18), और 'शशांकः' (1–3) के संदर्भों में पौराणिक

[व] कालिदास के काव्य श्रव्य काव्य में मिथक का विनियोग– उर्वी दवे, पृष्ठ क्र. ३७
[प] रघु. डॉ. श्रीकृष्णमणि त्रिपाठि, पृष्ठ क्र. १९६
[ग] कु.सं. श्री प्रद्युम्न पाण्डेय, पृष्ठ क्र. ४०३

देवताओं का उल्लेख मिलता है। विक्रमोर्वशीयम त्रोटक में केशिदानव, गंधर्वराज, उर्वशी, देवदूत, विद्याधर आदि अत्यंत स्वाभाविक मिथकीयपात्र हैं।

अभिज्ञान शकुंतला नाटक में अनुसूया शकुंतला के जन्म के बारे में कहती हैं –

'पुरा किल तस्य राजर्षेरुग्रे तपसि वर्तमानस्य किमपि जातशङ्कैर्देवैर्मेनकानामाप्सराः प्रेषिता नियमविघ्नकारिणी'।[r] मेनक ।अप्सरा की वह एक बेटी के रूप में जानी जाती है। जब इंदु और अत्यज उपनगरों में विचरण कर रहे थे, नारद आकाश मार्ग से गोकर्ण की ओर जा रहे थे। उनकी दिव्य माला इंदुमती के शरीर पर गिर जाती है और वह मर जाती है। देवताओं को आश्वस्त करने के लिए, विष्णु कहते हैं, ''मैं रावण का वध करने के लिए अवतार लूँगा, इसलिए तुम सब विमानों में बैठकर आकाश में उड़ जाओ।'' पुत्र के जन्म के समय ब्रह्मा देवताओं के समक्ष प्रकट होते हैं। कालिदास ने रूपकात्मक अलंकरण का प्रयोग करते हुए ब्रह्म को सूर्य की उपमा देकर ब्रह्म के प्रकट होने का वर्णन किया है। कालिदास ने रघुवंश में प्रियंवद गंधर्व को प्रकट किया – **'तेषामाविरभूद ब्रह्म परिम्लानमुखश्रियाम्। सरसां सुप्तपदमानां प्रातर्दीधितिमानिव' ॥**[t] रघुवंश में, दशरथ के पुत्र के यज्ञ के अंत में, एक दिव्य पुरुष यज्ञ की अग्नि में पायसम का पात्र धारण किए हुए प्रकट होता है। इससे पहले सीता के स्वयं के विवाह की घटना में परशुराम को पता चलता है कि राम विष्णु के अवतार हैं। रावण के अत्याचारों से भयभीत देवताओं को आश्वस्त करने के बाद विष्णु अदृश्य हो जाते हैं। जब भगवान शिव का धनुष राम द्वारा तोड़ा जाता है, तो अवतार विष्णु, परशुराम अदृश्य हो जाते हैं। इंद्रियों के जाल और माया के जाल का वर्णन संस्कृत साहित्य में अनेक कवियों ने किया है। तारकासुर और कार्तिकेय के बीच युद्ध के दौरान, तारकासुर ने मायावी युद्ध लड़ा – **'मायामयं समरमाशु महासुरेन्द्रो। मायाप्रचारचतुरो रचयाञ्चकार' ॥**[u] तपस्या द्वारा देवताओं को प्रसन्न करके वरदान प्राप्त करने और पाप करने पर श्राप मिलने के उदाहरण पौराणिक कथाओं में मिलते हैं। सुरभिधेनु का अनादर करने के कारण दिलीप पुत्र सुख से वंचित हो गए थे – **अवजानासि मां यस्मादतस्ते न भविष्यति। मत्प्रसूतिमनाराध्य प्रजेति त्वां शशाप सा' ॥**[v] जब राजा ने पूर्वकाल में नंदी की गाय की सेवा की थी, तब गाय ने राजा को वरदान दिया था। आठवें श्लोक में श्राप के प्रभाव से हिरण्य अप्सरा ने इंदुमती के रूप में जन्म नहीं लिया था – **'स तपः प्रतिबन्धमन्युना प्रमुखाविष्कृतचारूविभ्रमाम्।अशपद्भव मानुषीति तां शमावेलाप्रलयोर्णिमा भुवि' ॥**[w] ब्रह्मा ने वरदान दिया कि देवता भी

---

[r] अभिज्ञानशाकुन्तल प्रथम अंक
[s] रघु. डॉ. श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, पृष्ठ क्र. २५०
[t] कमारसंभवु श्री प्रद्युम्न पाण्डेय, पृष्ठ क्र. ३३
[u] तत्रैव, पृष्ठ क्र. ५९
[v] रघु. डॉ. श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, पृष्ठ क्र. ३५
[w] तत्रैव, पृष्ठ क्र. २६९

तारकासुर को न मार सकें। नौवें श्लोक में, पार्वती एकांत में अग्नि से व्याकुल हो जाती हैं। इसलिए उन्होंने अग्नि को श्राप दे दिया – **'त्वं सर्वभक्षो भव भीमकर्मा कुष्ठाभिभूतोऽनल! धूमगर्भः! इत्थं शशापादिसुता हुताशं रूष्टा रतानन्दसुखस्य भङ्गात्'॥**[x] देवता, दानव, अप्सराएँ, गंधर्व आदि सभी अपना रूप बदलने में सक्षम थे। देवताओं और दानवों के युद्ध में, राजा ककुत्स्थ[ल] ने बैल का रूप धारण करके दानवों का नाश किया था। इद्रपुत्र–जयंत ने भी कौवे का रूप धारण किया था – **'ऐन्द्रिः किलनखस्तस्या विददार स्तनौद्विजः। प्रियोपभोगचिह्नेषु पौराभाग्यमिवाचरन्॥**[z]

मेघदूत में यक्ष दैवीय जाति का एक विशिष्ट–मिथकीय पात्र है। मेघदूत की कथावस्तु यक्ष के श्राप पर आधारित है। हालाँकि, इसकी निर्भरता एक अलौकिक तत्व है। यहाँ कालिदास ने अलका नगरी और एक यक्ष की पत्नी का वर्णन बहुत ही स्वाभाविक तत्वों के साथ किया है। मेघ देवदूत में श्राप, उःशाप, श्राप का अंत, आशीर्वाद, वरदान और चमत्कार के रूप में अलौकिक रंग हैं। वैदिक साहित्य से अलौकिक तत्व प्राप्त होते हैं। भारत की कुछ किंवदंतियाँ अलौकिक तत्वों से परिपूर्ण हैं। कालिदास ने अपने काव्यों में अनेक अलौकिक और अलौकिक पात्रों की रचना की। कालिदास ने योग और तपस्या से प्राप्त शक्तियों, देवताओं, यक्षों, गंधर्वों और अप्सराओं जैसे अलौकिक पात्रों, चेतन और अचेतन वस्तुओं के मानवीकरण आदि का वर्णन किया। हालाँकि, कालिदास ने इनके चित्रण में एक नया अध्याय रचा।

उपसंहार –

भारतीय सृजनः 'मिथक' की उत्पत्ति, विकास और पतन की वास्तविक स्थिति थी। उनका समुचित विश्लेषण ही साहित्य का मूल तत्व है। पूर्व और पश्चिम के मिथकों ने वैचारिक मंथन को मान्यता दी है। जब भारतीय और प्राचीन परंपराओं के संज्ञानात्मक चरण अध्ययन और विश्लेषण के माध्यम से प्राप्त होते हैं, तो कला और साहित्य गहराई से विकसित होते हैं। साहित्यिक कवि का कार्य मानवीय विचारों को अपनी भावनाओं, कल्पना, विचारों आदि की साहित्यिक भाषा में वाणी में अभिव्यक्त करने में इतिहास से श्रेष्ठ है।

कालिदास निस्संदेह संस्कृत के महानतम कवि हैं। हमारे समाज द्वारा कालिदास को दिया गया सम्मान प्रशंसनीय है। लोककथाएँ और पहेलियाँ कालिदास की विद्वता, काव्यशैली और वाक्पटुता का विवरण देती हैं। कवियों, विद्वानों और अलंकारों ने उन्हें महाकवि, कविकुलगुरु, कविशिरोमणि आदि की उपाधियाँ प्रदान की हैं। हालाँकि, यह भारत माता का वैभव है। महाकवि कालिदास की प्रसिद्धि का वर्णन हर्ष की कृतियों में मिलता है। प्राचीन विद्वानों की एक लम्बी शृंखला थी जिसमें बाण, माघ, भारवि, श्रीहर्ष आदि कवि अलंकृत हुए हैं। इन काव्यों में काव्यात्मक बिम्ब, अलंकार, वर्णन, कल्पना और ज्ञान का समावेश है। किन्तु कालिदास के काव्य में हृदयस्पर्शी, मोहक और भावप्रवणता के गुण हैं। कालिदास उस समय के विविध

---

[x] कु.सं. श्री प्रद्युम्न पाण्डेय, पृष्ठ क्र.२६१

[y] 'महेन्द्रमास्थाय महोक्षरूपं'। रघु. (६–७२)

[z] रघु. डॉ. श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, पृष्ठ क्र. ३६५

[aa] विद्याधराऽप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः।
पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूताऽमी देवयोनयोः॥ (इत्यमरः)

ज्ञान–भंडार से परिचित थे। इस भण्डार में ज्योतिष, कर्मकाण्ड, धर्मशास्त्र, वैदिक विज्ञान, साहित्य, कामशास्त्र, राजनीति और कला जैसे विषय समाहित हैं। अश्वमेध यज्ञ, विश्वजित और पुत्रेष्टि जैसे यज्ञों का वर्णन, आश्रमों का विशद वर्णन, यज्ञीय धूम्र, यज्ञीय अग्नि, जलती हुई गाय और अग्नि–शरणस्थल से पता चलता है कि वे वेदों के ज्ञाता और संस्कृति प्रेमी थे। सांख्य, न्याय, वैशेषिक, वेदान्त आदि से पता चलता है कि वे दार्शनिक भी थे। वे इतिहास और भूगोल के भी ज्ञाता थे। प्रकृति के चरित्र आचरण की शुद्धता के लिए व्यावहारिक कौशल का परिचय देते हैं, जैसे माता–पिता और पुत्रों की मर्यादा, पति और प्रियतम का प्रेम, ऋषियों के वचनों से प्राप्त ज्ञान, पुरोहितों, दासियों, परिचारिकाओं के कर्म, लताएँ, पौधे, संस्कृति में तल्लीनता, पर्वत श्रृंखलाएँ, पूर्वजों की वंशावली, विदूषक आदि। रचनाकार की शकुंतला की रचना, काम और कला का अप्रतिम सौंदर्य, कालिदास की तुलना में गौण प्रतीत होता है। कालिदास ने वेदों, रामायण, महाभारत, भागवत और पुराणों का रोचक मूल्यांकन किया।

संदर्भ ग्रन्थ सुची

1. महाकविकालिदासविरचित अभिज्ञानशाकुन्तल, सुबोधचन्द्र पन्त, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पुनर्मुद्रित संस्करण, 2009

2. महाकविकालिदासविरचित कुमारसंभवम् सर्ग ५, श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण 2012

3. महाकविकालिदासविरचित कुमारसंभव, श्री. पं. प्रद्युम्न पाण्डेय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, पुनर्मुद्रित संस्करण 2010

4. महाकविकालिदासविरचित कुमारसम्भव महाकाव्य, डॉ. सुधाकर मालवीयः, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, पुनर्मुद्रित संस्करण 2014

5. महाकविकालिदासविरचित मेघदूत, आचार्य श्री शेषराजशर्मा 'रेग्मी', चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, पुनर्मुद्रित संस्करण 2010

6. महाकविकालिदासविरचित मेघदूत, सम्पादक डॉ. संसारचन्द्र तथा पं. मोहनदवपन्त शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, सप्तम पुनर्मुद्रण, 2013

7. महाकविकालिदासविरचित् रघुवंश-महाकाव्य, आचार्य धारादत्त मिश्र, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, चतुर्थ पुनर्मुद्रण, 2017

8. महाकविकालिदासविरचित रघुवंश, श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, पुनर्मुद्रित संस्करण २०११

9. महाकविकालिदासविरचित विक्रमोर्वशीय, व्याख्याकारः डॉ. विन्ध्येश्वरीप्रसादमिश्रः, 'विनयः' चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, संस्करण, 2013

10. वैदिक देवशास्त्र, डॉ. सूर्यकान्त, पाणिनि पब्लिशर्स, देहली, प्रथम संस्करण, 1961

11. संस्कृत नाटकों में अतिप्राकृत तत्त्व, डॉ. मूलचन्द पाठक, देवनागर प्रकाशन, जयपुर

12. संस्कृत साहित्य में नीतिकथा का उद्गम एवं विकास, प्रभाकर कवठेकर,चौखम्बा प्रकाशन

13. संस्कृत साहित्य का इतिहास (वैदिक काल से लेकर लौकिक काल तक), डॉ. सरोज भारद्वाज, चौखम्बा पब्लशिर्स, वाराणसी, प्रथम संसकरण 2014

14. संस्कृत साहित्याचा इतिहास दृ भाग ३, डॉ. सुरूचि पाण्डे, संस्कृत संस्कृति संशोधिका, पुणे, प्रथमावृत्ती, 2009